



DR. N. CHANDRASEKHARAN NAIR

Dr. N. Chandrasekharan Nair, an eminent Hindi Scholar of 95 years, is the Founder and Chairman of Kerala Hindi Sahitya Academy (KHSA), Thiruvananthapuram, Kerala. He was the former Head of the Department of Hindi at Mahatma Gandhi College, Thiruvananthapuram. Dr Nair was Awarded D.Lit., Major Research Fellow of U.G.C and Emeritus Professor of U.G.C. Dr. Nair has been nominated in Hindi Salahkar Samitees of 14 Central Government Ministries as "Salahkar" (Advisor) to the Ministers, Govt. of India. During 1989-93, he was nominated as a senator to the University of Kerala by the Governor of Kerala. He served as the Chairman of Hindi Text Book Committee besides so many other committees for Hindi Promotion and was also the Head of the Hindi Department of NSS Colleges in many parts of Kerala. He was actively involved in social activities. In Ottapalam, Palghat, he established Gandhi Vigyan Bhavan and was nominated as Chairman of Gandhi Centenary Committee. He is also the founder of many students' organisations like Gandhi Vigyan Bhawan and Bharat Yuvak Samaj in Ottapalam (Palakkad), Kerala to promote Gandhian way of life and his principles.

2. Born on 27th June, 1924 in Sasthamkotta, Kollam, Kerala in a middle class family, Dr. Nair after completing his studies and 4 years of teaching in high schools, joined as Lecturer in Hindi in the Mahatma Gandhi College, Thiruvananthapuram in 1951. He obtained M.A Degree in Hindi from Banaras Hindu University and Ph.D. from Bihar University. He pursued vigorously both academics as well as his literary works along with the routine teaching career in the colleges.

3. Dr. Nair, a strong Gandhian, took Hindi Propagation as his Dharma and his devotion to Gandhiji. For the last 77 years, he is promoting Hindi in a non-Hindi Speaking Southern State of India, Kerala as his mission for National Integration. Even at the age of 16, he used to teach Hindi in rural villages in different parts of Kerala. He established Kerala Hindi Sahitya Academy (KHSA) in 1980 to promote and protect national integrity through literary and cultural activities. For the last 39 years KHSA has been playing a proactive role in promoting Hindi language by organising Seminars, Workshops, bringing out Publications & Periodical Magazine "Sodha Pathrika" undertaking high quality Research, honouring personalities all over India in Hindi literature and Research with Awards and Recognitions, training and capacity building of youth in bringing out good Hindi publications, etc. He has a resourceful library in his house which is enabling Ph.D. students and other researchers to pursue their research and academics. Six Professors have obtained Ph.D. Degree on the works of Dr. Nair. Over a period of time, KHSA created a congenial atmosphere for Hindi Literature in Kerala. KHSA has been recognised by Central Hindi Directorate through Grants. It has honoured more than 180 Hindi writers, especially youth from different parts of India. Academy's publications, especially periodical "Shodh Pathrika" is nationally and internationally renowned. He has instituted an Award for the best Hindi Ph.D. Thesis in Kerala. The Award is of Rs 50000/-, Citation and Certificate. For the last 2 years he is giving this Award to eminent scholars in Kerala.

4. Dr. Nair is a renowned writer both in Hindi and Malayalam. He is renowned as a Poet, Novelist, Dramatist, Story Writer, Research Scholar, a well-known Artist in painting and critic in both art subject and literary field. He has written more than 50 original books in Hindi. Many of his books have been selected as text books by the Indian Universities. He gave "Preface" to many well-known works of noted writers. He has published articles in more than 800 periodicals in India and abroad. Dr Nair who is leading a Yogic life has many religious publications and works based on Upanishad, great epics like Adhyatma Ramayan, Chiranjeevi, Ram-Maruti Milan, Praises of Ram, Sree Lalitha SahasranamamVyakhyaye, etc. He has drawn more than hundred paintings. A number of paintings of Dr. Nair have been published in Indian Airlines magazines like Swagath. Many of his paintings were exhibited at Thiruvananthapuram and New Delhi.

5. Dr. Nair is the recipient of numerous awards and honours. He has received several National & State Awards and Awards instituted by eminent organisations which include prestigious "Vishva Hindi Samman" from former Home Minister, Shri Rajnath Singh at the 10th Vishva Hindi Samelan hosted by the Ministry of External Affairs, Government of India in Bhopal in 2015; awarded in the third World Hindi Conference held in 1983 in New Delhi; honoured by PSUs with TOLIC Award in 2018; awarded "Hindi Ratna Samman" by the Hindi Bhawan, New Delhi in 2014 and "Desh Ratna" by Uttar Pradesh Government; Ministry of Human Resource Development's award for Hindi writers in non-Hindi speaking areas for 2004-05. He also received the prestigious national award, "Ganesh Shankar Vidyarthi Samman" of Rs. 1 lakh from late former President Dr A P J Abdul Kalam in 2005 and Maharashtra Hindi Sahitya Academy award in 2008.





डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर

95 साल के प्रख्यात हिन्दी विद्वान डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी (केएचएचए), तिरुवनंतपुरम, केरल के संस्थापक और अध्यक्ष हैं। वह तिरुवनंतपुरम के महात्मा गांधी कॉलेज के हिन्दी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष हैं। डॉ.नायर को डी. लिट, यूजीसी के मेजर रिसर्च फेलो और यूजीसी के एमरिटस प्रोफेसर की उपाधि दी गई थी। डॉ. नायर को केंद्र सरकार के 14 मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समितियों में भारत सरकार के मंत्रालयों में ''सलाहकार'' के रूप में नामित किया गया। वर्ष 1989–93 के दौरान केरल के राज्यपाल द्वारा उन्हें केरल विश्वविद्यालय के सीनेटर के रूप में नामित किया गया। उन्होंने हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए कई अन्य समितियों के अलावा हिन्दी पाठ्य पुस्तक समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया और केरल के अनेक क्षेत्रों में एनएसएस कॉलेजों के हिन्दी विभाग के प्रमुख भी रहे। उन्होंने सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय योगदान किया। ओट्टापलम, पालघाट में उन्होंने गांधी भवन की स्थापना की तथा उन्हें गांधी शताब्दी समिति का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। डॉ. नायर गांधीवादी जीवन और उनके सिद्धांतों को बढ़ावा देने के लिए कई छात्र संगठनों जैसे ओट्टापलम (पलक्कड़), केरल में गांधी विज्ञान भवन और भारत युवक समाज के संस्थापक रहे हैं ।

2. 27 जून, 1924 को सस्थमकोट्टा, कोल्लम, केरल में एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मे डॉ.नायर ने अपनी शिक्षा पूरा करने और उच्च विद्यालय में अध्यापन करने के बाद, 1951 में महात्मा गांधी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम में हिन्दी में व्याख्याता के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से हिन्दी में स्नातकोत्तर और बिहार विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की। डॉ. नायर ने महाविद्यालयों में नियमित अध्यापन के साथ–साथ शिक्षण और साहित्य दोनों विधाओं में उत्साहपूर्वक कार्य किया।

3. एक दृढ़ गांधीवादी डॉ. नायर ने हिन्दी के प्रचार प्रसार को धर्म और गांधीजी के प्रति समर्पण के रूप में लिया। वह विगत 77 वर्षों से, राष्ट्रीय एकता के अपने मिशन के तौर पर एक गैर–हिन्दी भाषी दक्षिणी राज्य केरल में हिन्दी का प्रचार–प्रसार कर रहे हैं। 16 साल की उम्र में भी वह केरल के विभिन्न हिस्सों में गांवों में हिन्दी पढ़ाते थे। डॉ. नायर ने साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से राष्ट्रीय अखंडता को बढ़ावा देने और उसकी रक्षा के लिए 1980 में केरल हिन्दी साहित्य अकादमी (केरल हिन्दी साहित्य अकादमी) की स्थापना की। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी पिछले 39 वर्षों से सम्मेलनों, कार्यशालाओं, पुस्तकों और उच्च स्तरीय शोध करके "शोध पत्रिका" नामक आवधिक पत्रिका के प्रकाशन, हिन्दी साहित्य और शोध के क्षेत्र में अखिल भारतीय स्तर पर महत्वपूर्ण व्यक्तियों को पुरस्कार और उपाधियों से सम्मानित करके और हिन्दी की उत्कृष्ट पुस्तकों के प्रकाशन में युवाओं के क्षमता निर्माण आदि के माध्यम से हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। डॉ. नायर के घर में एक समृद्ध पुस्तकालय है, जिससे पीएच.डी छात्रों और अन्य शोधकर्ताओं को उनके शोध और शैक्षिक क्षेत्र में सहायता प्राप्त हो रही है। डॉ. नायर के साहित्यिक कार्यों पर छह प्राध्यापकों ने पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की है। विगत कुछ वर्षों में केरल हिन्दी साहित्य अकादमी ने केरल में हिन्दी साहित्य के लिए अनुकूल माहौल बनाया है। केंद्रीय हिन्दी निदेशालय ने अनुदान प्रदान करके केरल हिन्दी साहित्य अकादमी को मान्यता दी है। इस संस्था ने 180 से अधिक हिन्दी लेखकों खासकर भारत के विभिन्न हिस्सों के युवा लेखकों को सम्मानित किया है। अकादमी का प्रकाशन, विशेष रूप से आवधिक ''शोधपत्रिका'' राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है। डॉ. नायर ने केरल में सर्वश्रेष्ठ हिन्दी पीएचडी के लिए एक पुरस्कार की स्थापना की है। इसके लिए 50000/– रुपये का पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र और प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है। पिछले 2 वर्षों से वह केरल में प्रख्यात विद्वानों को यह पुरस्कार प्रदान कर रहे हैं।

4. डॉ. नायर हिन्दी और मलयालम दोनों भाषाओं के प्रसिद्ध लेखक हैं। वह कवि, उपन्यासकार, नाटककार, कथाकार, शोध विद्वान, प्रसिद्ध चित्रकार तथा कला विषयों और साहित्य दोनों क्षेत्रों के आलोचक के रूप में जाने जाते हैं । उन्होंने हिन्दी में 50 से अधिक मूल पुस्तकें लिखी हैं। उनकी कई पुस्तकों को भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा पाठ्य पुस्तकों के रूप में चुना गया है। उन्होने अनेक प्रसिद्ध लेखकों की मशहूर पुस्तकों के लिए ''प्रस्तावना'' लिखी है। उनके आलेख भारत और विदेशों में 800 से अधिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये हैं। योगी के समान जीवन जीने वाले डॉ. नायर ने उपनिषद तथा अध्यात्मरामायण, चिरंजीवी, राम–मारुति मिलन, राम की स्तुति, श्रीललितासहस्रनामम व्याख्या आदि महाकाव्यों पर आधारित कई धार्मिक कृतियों की रचना की है। उन्होंने सौ से अधिक चित्र बनाए हैं। डॉ. नायर के कई चित्र भारतीय एयरलाइंस की पत्रिका 'स्वागत' में छपे हैं। तिरुवनंतपुरम और नई दिल्ली में उनके चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित की जा चुकी है।

5. डॉ. नायर को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें कई राष्ट्रीय और राज्य पुरस्कार और प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा स्थापित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं जिनमें वर्ष 2015 में भोपाल में विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित 10 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में पूर्व गृह मंत्री, श्री राजनाथ सिंह के कर कमलों से प्रतिष्ठित ''विश्व हिन्दी सम्मान''; 1983 में नई दिल्ली में आयोजित तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन में सम्मान; 2018 में पीएसयू द्वारा "टोलिक पुरस्कार'; वर्ष 2014 में हिन्दी भवन, नई दिल्ली द्वारा 'हिन्दी रत्न सम्मान'; उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा ''देशरत्न'' सम्मान; 2004–05 के लिए गैर–हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी लेखकों को मानव संसाधन विकास मंत्रालय का पुरस्कार शामिल हैं। उन्हें पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम से वर्ष 2005 में 1 लाख रुपये का प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार ''गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान'' और वर्ष 2008 में महाराष्ट्र हिन्दी साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है ।